



ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः  
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय  
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय  
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)  
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 25 अंक: 58 बुलेटिन अवधि: 26 – 30 नवम्बर 2016 दिन: शुक्रवार दिनांक: 25 नवम्बर, 2016

**मौसम पूर्वानुमान:**

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	26-11-2016	27-11-2016	28-11-2016	29-11-2016	30-11-2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	27	26	26	25	25
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	08	09	08	08	07
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	80	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	06	04	04	02
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम	पश्चिम-उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-दक्षिण-पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (18 से 24 नवम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान में सुबह हल्के बादल छाये रहे तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 25.5 से 27.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.4 से 10.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 90 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 35 से 51 प्रतिशत एवं हवा 1.3 से 3.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

**कृषि मौसम परामर्श**

**फसल प्रबन्ध:**

❖ सिंचित दशा में चने की सामान्य बुवाई नवम्बर के दूसरे पखवाड़े में पूरी कर लें।

- ❖ चना की उन्नतशील प्रजातियों –पूसा 256, के0-850, अवरोधी, पंत जी-114, पंत जी-186, पंत काबुली चना-1 आदि की बुवाई सिंचित दशा में 45 से0मी0 की दूरी पर बने लाईनों में 6-8 से0मी0 गहराई पर करें। बुवाई से पूर्व स्वयं उत्पादित बीजों को बीज जनित रोगों से बचाव हेतु सर्वप्रथम 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम तथा 2 ग्राम थायरम के मिश्रण से शोधित करें। इसके उपरान्त राइजोबियम कल्चर एवं फास्फोरस घोलक कल्चर से भी उपचारित करें। बुवाई हेतु बीज दर छोटे एवं मध्यम आकार के बीज वाली प्रजातियों के 60-80 कि0ग्रा0/है0 तथा मोटे दाने वाली प्रजातियों के लिए बीज दर 80-100 कि0ग्रा0/है0 रखें। बुवाई से पूर्व खेत में 15-20 कि0ग्रा0 नत्रजन, 40-50 कि0ग्रा0 फास्फोरस तथा 20-30 कि0ग्रा0 पोटाश /है0 प्रयोग करें।
- ❖ फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- ❖ दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- ❖ पेड़ी गन्ना के रस में ब्रिक्स की मात्रा जाचते रहें। जब ब्रिक्स की मात्रा 18 प्रतिशत हो जाय तब नवम्बर माह में मिल से पर्ची आते ही सर्वप्रथम गन्ने की कटाई कर गन्ना मिल में भेजे तथा खाली हुए खेत की तैयारी कर रबी फसलों की समय से बुवाई करें।

### उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0 या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- ❖ धनिया की बुवाई करें। खेत में नमी न हो तो एक सिंचाई पलेवा के रूप में करें।
- ❖ जिन स्थानों पर आलू की अगेती बुवाई की है वहां पर पत्तियों पर भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मूली की बुवाई वर्षभर चलती है। यूरोपियन प्रजातियों हेतु 6-8 किग्रा बीज तथा एशियन प्रजातियों हेतु 10-12 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ मूली के बीज बोने से पहले खेत में गोबर की खाद (सड़ी हुई) का प्रयोग करें। मृदा जांच के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करें। कतार की दूरी 20-25 सेमी रखें तथा बीज बोने पर अंकुरण होने पर अनावश्यक पौधों को उखाड़कर अलगकर पौधों से पौधों की दूरी 8-10 सेमी सुनिश्चित करें।
- ❖ लहसुन की फसल में निराई गुड़ाई एवं सिंचाई करें।
- ❖ गोभी वर्गीय फसलों में पत्तियों पर गोल छीलेदार धब्बे दिखाई पड़ने पर मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ फास्फेटिक एवं पोटेशिक उर्वरक का संस्तुत मात्रा का प्रयोग मुख्य तना से लगभग 2 मीटर की दूरी पर गोल नाली में प्रयोग करें।
- ❖ करी कीट का मुख्य रूप से आम में नियंत्रण हेतु वृक्ष के मुख्य तने के पास गुड़ाई करें तथा क्लोरपाइरीफॉस (5 प्रतिशत) का 200-250 ग्राम बुरकाव करते हुए मिट्टी में मिला दें। पॉलीथिन शीट लगाकर सुरक्षात्मक उपाय करें।
- ❖ उर्वरक डालते समय अगर मृदा में उचित नमी नहीं है तो पहले सिंचाई करें।
- ❖ फल वृक्षों में मुख्य पोषक तत्व जैसे फॉस्फोरस और पोटाश के अलावा सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी प्रयोग करें। इसके लिए पूर्ण रूप से विकसित 10 वर्ष के फल वृक्षों में 250 ग्राम बोरेक्स, जिंक सल्फेट एवं कॉपर सल्फेट का भी प्रयोग करें।

## पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नहीं लगें हैं उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- ❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा० आर० के० सिंह  
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी  
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,  
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर